





सनमं सयुक्तं लक्ष्मीवीक्ष्यं लकुलधनुजगं गति  
मक्तिमविन्द नोमिधिसिद्धिदातु वेदककुलसु  
तं यागुमाद्वालदधं ॥ २ ॥ विष्णुसंज्ञितवधु  
कविददनवली न कदकं चित्तं मूर्धमूलसि  
दनीयनधुय द्वालिर्ग मूर्धलल्लूकयागं ४ ध्यात्वा  
वीर्ययुचुं मूनयनिदधनं वाद्यनक्षीसविन्द

नोमि ४ ध्यात्वा मूनयुक्तं वक्रचयदुनर्धं यागुमावि  
द्विनाज ॥ ३ ॥ ॐ नित्यवया ॥ ॥ ज  
धुविद्विद्या ॥ गुरुनाथनथेवं मूर्धनमयिनद  
दा देवचक्षीसनाथं मूर्धनसनाथदेवं गुरुमयि  
विदितां विदुन्मयसिद्धिं विदुर्द्विज्ञानध्यानदद  
यनमयदं वक्रविष्णुमन्यं नवास्माकं कथामि



यतिदि वसमदु सर्वदासाकदातु ॥ ४ ॥ नवान्ना  
म ॥ नममधु इकुयिनाकमही वगमनं वामवर्षुद  
साशु खरुनक मू पीतं तदुयविदिन्दु रं मध्य  
यकिं वगु र्कं दकं वृष्वच कुस यनत्राशित  
कन वामपीतं डिमा क्कं रमधुमग्नि रुवर्षि  
दहीनतकी नोमिनन्यात्मनाथ ॥ ५ ॥ न

कैकुष्वचकुस यमत्राशितकन वामपीतं डिमा क्कं  
रमधुमग्नि रुवर्षि ॥ नदिदधनयकी नोमिनन्या  
त्मनाथ ॥ ५ ॥ दकं वृष्वचकुस वनदयनक  
लं चक्रादा वधुवान् हं दिहिमा क्कं विगुलं त्य  
सिमयविकन वामरुक्मसविन्दु न धृत्वा देवान्  
वात्सा रुयमपिचगदा दधुका वामरुक्म रुव



द्वार्गवसकुली शृङ्गिमयलिकर्ण शृङ्गवर्कपादुवः  
ना ॥ १ ॥ यथावाचकीनवातां गङ्गालकुलगर्ग चि  
निर्गदेकाचिनी नैकावर्म (ध) समुद्र जलनिधिद्युय  
न वेदलृगीत (ध) वः ॥ गदाद्यो गुरुगार्ग चतुर्दिग  
धितं दानमेते सद्गाले सायचके गिनार्थ धनमृत  
रुलद यावद्वचनदव ॥ १ ॥ श्रीगीर्गिलला

नवदनद्रुदियुत नारिगुर्ग वजाती नृत्तनीपा  
वज्रधी नगगिनविनुवी नृगुदीमे यथाद्य चन्द्र  
धेवामसुधे जगगतनगर्ग रेववामनद द या  
यादेवानवाता ॥ ०० रुपदमूरुदा न्यासरु ५ द  
नमर्ग ॥ १ ॥ ६ ॥ कलसया ॥ देवाम गद्युद्युध  
युतमविचयन ॥ यन्त्रवः ॥ कुमुमूर्ति ॥ गान्दीने



स्तीर्थभाष्य ४ कृष्णमरुलसुगं ध्यायधीवीरुननेष्टादिये  
कृष्णकृताधिमलयननमसि ॥ दृष्टिस्मिदूनदूर्वा  
पृथ्वीनेवेंद्रवृथे ४ स्वकुलजविविधैकतन्त्रमयक्षु  
कुल ॥ ९ ॥ **॥ सुनयकिया ॥** समंमंकायदेनं ग  
गणगणसकं ॥ यत्नमकं सक्रादं सविज्ञानन्ददेवं  
वसक्यगुनवं ॥ गीकयकं धनवेष्टादेवानन्दय

वेंद्रुं निरुच्यरुने ॥ अयनानन्ददेवं ॥ यकं याद  
गुभावं ॥ नियुजकुरुलयदेमूलवीजं ययूजं ॥ १० ॥  
**॥ ध्यायधीया ॥** यद्वक्ष्ये यत्नविष्टं जवकृममनिष्ठं यान  
वामं विवकं ॥ यद्वक्ष्ये दृष्टं दक्षं ॥ अस्मिन्मनूषयी  
सुगकाइयश्च दक्षं ॥ गङ्गानीश्वरिष्टं ॥ सुदुग्ध  
रुलदेमूत्यलीविन्दुवामं ॥ सद्योष्टधनृगीगिनि



बीरुजगधनं वदन् दीव्याय ॥ ११ ॥ श्रीकृष्ण  
या ॥ ॥ अथ नृलोकवर्क चतुर्ज ॥ सदिन  
साकसूतनिष्ठं नृलोकवर्कं ददौ रुक्मं ॥ अथ नृक  
वर्धनं देवीपारुल्लक्षणं ॥ वामो नृध्यावदेवीरु  
नीतननूवरं युग्मवाकं सुमार्कं ॥ देवकल्लुकरं  
कं वृषरुचिगमनं ॥ अथ श्रीकृष्णनाथ ॥ १२ ॥

शुक्लाक्षनीनिष्ठं वृषरुचिगमनं ॥ सुकुरुक्षुनिष्ठ  
लं नृदयाचीवर्कं वं ॥ धृतराष्ट्रनियतं देवीका ॥  
निर्गंयार्तं ॥ वामो नृसूतवानिष्ठकममकिनव  
देवकालिर्गकं ० ॥ वामो नृसूतवानिष्ठकममकिनव  
रुचं ॥ श्रीकृष्णनाथ ॥ १३ ॥ वृद्धाश्वादि ॥  
वाक्मीमांसाश्चैव ॥ कुरुजवद्विज्ञा ॥ सायनसू



कौमारी वेष्टुवा नारी दुष्टि गमघनि नगन धीम  
गति विनेगी ॥ वावादी चेलु शकी अनवश दददि  
॥ कामभादि दती चामधु चधुमहि सिद्धि न  
रमनी देवीया गश्चरी दे ॥ १४ ॥ **रगवताया**  
॥ गन्धक धि कभुं रुप्रिगन गमनी मादी वभुं  
कयादी तयक्यामी कला रा शु रुवदन वया

नकव कृति मीती ॥ १५ ॥ दकवाम कयी वमद  
गमरुजा ॥ यमवत्त गिनुषी तनी मिश किनु  
यिदि रुवन जननी पाहु माड गुव छी ॥ १६ ॥  
**वागेश्वरीया** ॥ वदमभुमव कृति गिनु ववि वयषी  
लोनरी नी शु रुषी रुसाया ये शु भा र वन  
भु रुय व नी रु र्ग यी न म दे दी ॥ वीजं छी ॥



लिङ्गितार्थे कनकमये, काठमालावलीयासि  
त्वायासादमूर्ध्ने, सकलजनवर्से वातुहावा  
गेश्वरोर्वे ॥ १७ ॥ **कर्मया** ॥ मय्यगिष्ट्रिक्त  
ग्र, प्रितयवृत्तयुगे, चाष्टयुगेष्ट्रिक्त, श्रुमिच  
ष्ट्रुवृत्त, कमलदलरुवे, वातुगान्द्विती  
य, चतुर्वृत्त, चतुष्ट्रि, चतुर्द्विगलरुवे, द्वाव

मतेयुसभं, सायं ग्रीकर्मचक्रं, विविधरुल  
युदं, वातुमग्रीकुञ्जं ॥ १८ ॥ ओं जायूकादि  
गिष्ट्रि, गिवगगतियुगे, गिगमध्वावतात्रं, यूव्वयि  
चतुष्ट्रि, विमलगणयुगे, नादेंनादुगलभं,  
मालिन्त्र, चतुष्ट्रिवाक्, द्वयेद्वयेष्ट्रि, श्रु  
चान्नाकयभं, वायूवा, अष्टिष्ट्रि, सकलउल



रथं यागुमांसिद्विदुर्ध्वं ॥ १७ ॥ पूर्व नृद्वि  
दुर्ध्वं मननं गयमरेवंष्टद्विदुर्ध्वं ॥ विष्णुमष्टकं कुंजं गीच  
तुनदिगमिर्ध्वं ॥ मित्रचक्रावधुर्ध्वं ॥ आधिसुने च ॥  
श्रीजकुलकुलरुध्वं ॥ गीवमिर्ध्वं चतुर्ध्वं ॥ यागुष्टीगी  
शमये चतुलदिमिर्ध्वं ॥ कोर्कनाद्याचतुर्ध्वं ॥ १८  
॥ अदिजानन्दचतुर्ध्वं ॥ दूततुकादिगडं ॥ संसिन्ना ॥

धानचक्रं ॥ दानद्यादिचतुर्ध्वं ॥ चलदिगगनं ॥ चक्र  
माक्रादिसष्टं ॥ चन्द्रसूर्यचवद्वि ॥ गितथं वृत्तयुग्मं ॥  
मधुर्ध्वं ॥ गीनिर्ध्वं ॥ सुविशानिर्ध्वं ॥ जकुलकुल  
गनं ॥ यागुमांश्रीकुंजं ॥ २० ॥ अदिजानन्दचतुर्ध्वं  
॥ ग ॥ अकचतयय ॥ चाष्टयुग्मं ॥ न द्वाष्टी



इं वाक् गगणगणस्त्रितं नन्दनाथनन्दनं मृश  
द्यावाभुज्जात्रं पुनचकुर्ददितितं भाउगात्रं म  
सारं पृथ्वीतंसकुर्वुं निनननयुगनं याकुर्मा  
श्वेतम (॥ २१ ॥ ~~पृथ्वीतंसकुर्वुं निनननयुगनं~~  
लयनं दक्षिणाद्याकुलाश्वं नकाश्वितयवर्णं  
कुलकयतिदिशं नकायवर्णं वृषगा वृषेष्टनयय

कं पुषवगनयुगं नक्षिद्रावृषवर्णं कल्मसाग  
ग (॥ २२ ॥ ~~वाकुर्मायागिनीजा~~  
॥ २२ ॥ चाकु (॥ यन्निमेषु रितयेगगिनि  
वाननं जं वृषसुं याम्यगिनिशास्त्रं वृषक  
मिगिनि रवे द्वायम (॥ यंसमसं ॥ ४ ॥ जगीतागिद  
सिद्धासुययतिसमं ननं चाष्टवीश्वशानं य



कैलासामिदीर्घां सकलकलमया यातुं चक्रं  
 गीत ॥ २३ ॥ येनैव चक्रं यदा मुनवृषद्विग  
 निलयश्चांगीर्षं याम्यवकं ॥ वामं कनक  
 ०० वनिरं मर्कटां सुगोर्ध्वं । दक्षिणं लवकं  
 ध्वजवदकं वामकं कालिजार्गं सुगंदिआ  
 नयडं गजलवद्वयैव यातुमां कम्पदं ॥

२४ ॥ गीर्धेनीलाङ्गनारा ॥ पुरुवदनकामा ॥  
दक्षेनकेयिवका ॥ वामेयीगंछकारा ॥ दयवि  
गिनजवा ॥ दक्षदक्षेगिधूला ॥ चक्रवर्जि ॥ छ  
शाहासलकलदर्पणी ॥ कर्किवामेयमधु ॥ स्वधा  
गिद्यधुविद्या ॥ धनूचक्रकर्म ॥ वागुर्माकर्मिक  
कि ॥ २३ ॥ मयसंभुनधान ॥ अकुलकुल



टंसाठस्य युद्धिमा कार्तिका रत्नं लीचगुडस्य रसदजीभिः  
तामचक्रं दयस्वनादकृत्वा कृत्वा निकाशा ॥ जययूगाया ॥  
वेष्माषमानस्य उया नृगयानवस्थासो कार्तिक कृत्वा कृत्वा नरुस्यमा  
सम्यग्मिश्रय कृत्वा दजीय रसदजीमाश्च चषायूगायाश्च कथिना  
यनालेन ननु युष्मा मूनया वदन्ति ॥ ॥ ज्ञानिदिनान्ययमि ॥  
नविमं कृत्वा वेवस्यस्य चरुनगथा ॥ नरुत्तनादिकी कवित्रिवि

नपुत्रं कृत्वा ग्रहस्थिते कृत्वा रत्नं आदि

ASHA ARCHIVES



वार्थकथश्चन॥ गणायिविष्णुममि॥ नकृशोच्चकिं कीदीः  
कामयनकृविलावसो॥ नकृशोद्वेष्वीगानुयदिवनुमसाग्र  
॥ ॥ समुत्तम॥ माश्विनीमासकृष्णयकृदादशीउग्रायाव॥ ॥  
यान्गानिश्चनवानेथकृष्णायविकिसाकृवेद्यनमानन्दन  
लिखित्वा॥ ॥ शुभमस्तुसर्वदा॥ ॥ शुभशुभा ॥ ॥



२४ श्री गुरु वनम ।

२५ नमः ४६ श्री वल्लिकाय ॥ गङ्गा मातृका रणादि ॥ १ ॥  
तुन्दरी वदु कानवदु हृदय निलम्बा चर्वनाथो  
लनूपा सिद्धि नष्ट द(ग) मू य विवृता सगता  
वम(धे) म्रको दौ ॥ लम्बा विद्या ननूपा यशु  
रयवृता दनुना दू ॥ ४ ॥ सा देवी कुङ्कु

खा ॥ शिखु वन नमिता या पुमी म नुयुक्ता ॥ २ ॥  
निष्काना का नच कु र दि व नय तिरा ॥ यदि ॥  
शान्त यनी ॥ चक ॥ वल्लय नी ॥ यन विष्णु नर  
ला ॥ ६५ ॥ ४ ॥ यूनयनी ॥ ४ ॥ न वंथान कि  
युक् ॥ ॥ न निव सगरी ॥ सर्व नाग जमीव ॥



सादवी कुट्टि कारवा यवमसतर्ति जीविव  
येसु जोडी ॥३॥ या सा गृंगमटका ना यत्र  
यत्र यत्रा दवी गुद्वारु मखा यी १० डाली  
धना ३ ॥ ४ कुम म यत्रि वृता या मिनी वीप

वृद्ध ४ गवध ४ मि द्दमं द्ये म द्दम द्दम म नूज  
॥ च चिनामव काल सादवी कुट्टि कारवा ॥  
उवनन मिता यातु मी वद्वय क ॥ ५ ॥ सिं इन  
श्री श्रि जोडी ॥ विपुन पुन गता द्याग यनी सम  
त ना दा सु ॥ वि वि व कुत्र य (थ) य (थ) न  
नान न सु



यु विष्टः ४ आनकाह पूरु या ३ अ म कुल मया  
यावयगाति लाका न कि न कि उ अ ह सा यु म  
दि न म म श्री के ज मा यु ना पु ॥ ५ ॥ या अ नामा  
अ श्री १० र न व गि म क ला ०० ३ वि ३ गु म ति  
य द म य स ल गी उ न य द स क ल ३ क प य श्री

यदा ने ४ समा न स व ने ४ अ स न म य न वि  
द य यार म दा ४ ग ल र क र य नी ग गि न वि  
वि न ने ४ श्री कु कु गी न मा मि ॥ १ ॥ ह स र स मि ह  
म क लि म न द द न नि म ल इ यी म न र्य कि  
जा य द्रा स न र्क ३ थि न यि य य द ३ को लि ना



दसहं सकलकुरुमनः श्रीकुरु श्रीनमामि ॥  
अवगमनां गगनगमयत्र संमिताव  
उसृष्ट कमागेषा उभात्र पुनरित्युक्तिदिभः  
वृक्षत्रैकाग्रप्रलम् ॥ ४ ॥ सुसूत्रनगकिचकुं कमसि  
कुमयदं शान्त्यतिगमनं अमिमादृदिनिर्णयं

रावरावद्वलः श्रीकुरु सुदिमार्ग ॥ ५ ॥ श्रीमा  
गसिद्धिचक्रः छिदलदलः कोलिक श्रीकला  
नीः एतस्मान्नवस्तुः समस्य सावयनीः स्वद  
हः मातनी छिष्टयी ॥ १० ॥ नमयवल्हनाः मुलद  
वीकुलालः कल्याणीकारककिः शत्रुदमोणि



निरा. श्रीकुण्डाम्यानमामि ॥ ६॥ नादार्कनादय  
नीरुगमथनयूत्रविन्दमय्यम्भनं डाडा  
यूकगिसेरुदगोषरुलकला मर्डीलादव  
दवी ४ दी ४ पी ४ की ४ कालवीडे ४ त्रिगुलिनगुरुग  
५१३ गाल्वीगिर्त्य नत्वा नीकर्वनीर्त्य यञ्जय

दलनी श्रीकुंज मायनातु ॥१०॥ झां झां की की  
लकिनें भानकुसुमधनं नकुंभिया गदभु न  
हो अत्र त्रासनसु गसयवकगया थिषसु  
सनसु ॥१॥ सदा यम सु निनासी रुगवनिज  
मने कुंद कीयासर्व ॥१॥ दवीनामा यदवी



विद्ययज्ञि समवे विद्य जाला कुतुं श्री ॥ १५ ॥  
कामाक्ष विन्दुं देवी ॥ शिव वनजननी त्वं वद ले  
नयं सः श्री मा त्वं ज्ञादिव कं पुत्र वसु नव प्रजं  
दि गो रूपा नि ला कं वा तु व प्रियु मां न कट विक  
ठं कं ० की कष काना वृद्धं श्री को ले नृथ न

व श्री मय श्री कुतुं मां कृ मय ॥ १२ ॥ ॐ श्री गं द  
द श्री मय श्री को हिल का निर्गता शिका लेय ० मय  
सु न स्या रू स विव रुत १। १ कान विजय लय  
उडी नवा उहा न न नदी संग मनी प्रवा श्री श्री



नवाचतुष्य (थे) ४। प्रकलि नथवाकवु नीत्री  
गुरु मन्त्री नम्य ४ कुमा (चय) ० नथाव प्रकवि  
रुसमादिन ४। यथा सार्वत नास्ति यथना  
दयि वरु न वन क्रिया किं विदु रुला कुमयू  
क्षली लय ॥ सि द्धा नाय स द हूं ल्या वा

नमम्यत्री ॥ १३॥ हूं मि चतुर्विंशतिसा द्वासु  
क्षेत्री कु डि कसु मिस माय ॥ ॥ गुरु ॥







॥ देवसर्वमिदं जगत् ॥ देवाजयमि सर्वं ॥ आ देवास  
महर्षेभ्य नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥